

X ▲ Epaper

epaper.ajitsamachar.com



बीपीएस महिला विश्वविद्यालय में दीक्षारम्भ कार्यक्रम का आयोजन

गोहाना, 11 सितम्बर (रामनिवास धीमान): उपमंडल के गांव खानपुर कलां स्थित भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में आज छात्रा कल्याण अधिष्ठाता प्रो. श्वेता सिंह ने दीक्षारम्भ कार्यक्रम 2025 का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुदेश ने की, जबकि कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि समाजसेवी व व्यक्तिगती श्रीपवन जिंदल ने छात्राओं को संबोधित किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित शिक्षिका सुनीता द्विल ने शिरकत की। अपने संबोधन में पवन जिंदल ने कहा कि भारत की संस्कृति बहुत श्रेष्ठ है, यह ऋषि मुनि और गुरुओं का देश है। उन्होंने कहा कि बच्चे की पहली गुरु माँ होती है। परिवार से संस्कार खत्म होते जा रहे हैं जो हमारी धरोहर थी। नैतिक शिक्षा गुरुओं से मिलती थी जो आज बिल्कुल खत्म हो रही है। गुरु शिष्य परंपरा श्रेष्ठ परंपरा थी। माँ और गुरु सबसे श्रेष्ठ होते थे। उन्होंने कहा कि आज इस परंपरा को फिर से उठाना



दीक्षारम्भ कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए पवन जिंदल व कुलपति प्रो. सुदेश। होगा। सुनीता द्विल ने छात्राओं से सुदेश ने उन्होंने छात्राओं को आश्वस्त आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि किया कि केवल विषय संबोधित शिक्षा रास्ते से न भटके, अपने शिक्षकों के ही नहीं अपितु संस्कारित व कौशल बताए मार्ग पर चलें। कुलपति प्रोफेसर युक्त शिक्षा के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

सैकड़ों एकड़ जग्मीन समार्ग यमुना में किसानों ने मुआवजे की मांग

यमुनानगर/जगाधरी, 11 सितम्बर (नेपाल सिंह/ सुनील): भारतीय किसान यूनियन के नेतृत्व में रादौर क्षेत्र के गांव नकुम्भ के ग्रामीणों ने जिला उपायुक्त पार्थ गुप्ता के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम यमुना नदी में बाढ़ के कारण समाई सैकड़ों एकड़ भूमि के मुआवजे को लेकर मांग पत्र दिया। ज्ञापन के माध्यम से बताया गया है कि गांव की लगभग 200 एकड़ भूमि जिसमें खड़ी फसल पॉपुलर, गन्ना, ट्युबवैल, बिजली के कनेक्शन और मकान सब यमुना नदी में समा गए। उन्होंने बताया कि यह कृषि मंत्री के क्षेत्र का गांव है लेकिन आज तक कोई भी अधिकारी गांव में जायजा लेने तक नहीं गया।

कभी भी बोझ नहीं होती, दो घरों को संवारती हैं बेटियां



गोहाना मुद्रिका, 11 सितंबर : बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय में गुरुवार को छाता कल्याण अधिष्ठाता प्रो. श्वेता सिंह द्वारा दीक्षारम्भ कार्यक्रम 2025 का आयोजन किया गया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय की वी.सी. प्रो. सुदेश ने की। मुख्य अतिथि समाजसेवी पवन जिंदल और विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित शिक्षिका श्रीमती सुनीता ढुल रहे।

सुनीता ढुल ने कहा कि बेटियां कभी भी बोझ नहीं होती, बेटियां दो घरों को संवारती हैं। उन्होंने बेटियों से आग्रह किया एकाग्रता के साथ लक्ष्य पर फोकस करके मेहनत करें, सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने कहा कि शिक्षक का दायित्व बहुत बड़ा होता है, केवल शिक्षा ही नहीं देनी अपितु बच्चों के अंदर छुपी प्रतिभा को पहचान करना और उसे निखारना शिक्षक का मूल दायित्व है।

सुनीता ढुल ने कहा कि छाता अपने माता-पिता का सपना पूरा कर सकती है उन्हें बुलंदियों पर लेकर जा सकती हैं। छाताओं से आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि

रास्ते से न भटकें, अपने शिक्षकों के बताए मार्ग पर चलें। अपनी एनर्जी को सही दिशा में लगाएं। मां अपने बच्चों की प्राथमिक शिक्षिका होती है बच्चों को संस्कारवान शिक्षा देना माता की जिम्मेदारी होती है। पवन जिंदल ने कहा कि भारत की संस्कृति बहुत श्रेष्ठ है। यह ऋषि मुनि और गुरुओं का देश है। उन्होंने कहा कि बच्चे की पहली गुरु मां होती है। उन्होंने कहा कि आज भौतिकवाद के युग में एकल परिवारों का क्रेज बढ़ रहा है, जिसकी वजह से समस्या भी उतनी ही बड़ी होती जा रही है।

आज का बच्चा संस्कार विहीन होता जा रहा है। परिवार से संस्कार खत्म होते जा रहे हैं जो हमारी धरोहर थी। नैतिक शिक्षा गुरुओं से मिलती थी जो आज बिल्कुल खत्म हो रही है।

जिंदल ने कहा कि गुरु शिष्य परंपरा श्रेष्ठ परंपरा थी। मां और गुरु सबसे श्रेष्ठ होते थे। उन्होंने कहा कि अब इस परंपरा को फिर से लौटाना होगा। औरत हर युग में श्रेष्ठ रही है। जीवन में मां का रोल बहुत बड़ा होता है। बेटियां भारत का भविष्य हैं, देश निर्माण की बड़ी जिम्मेदारी हमारी बेटियों पर है। सच्चाई, ईमानदारी, दृढ़ संकल्प से कोई भी काम किया जा सकता है। छाता कल्याण अधिष्ठाता विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक गतिविधि पुस्तक का भी विमोचन किया गया। इस अवसर पर प्रो. शिवालिक यादव, प्रो. विजय नेहरा, प्रो. इश्विता बंसल, प्रो. सुषमा जोशी, डॉ महेश कौशिक, डॉ कृतिका दहिया आदि मौजूद रहे।

ਕਨੀ ਭੀ ਬੋਝ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ, 2 ਘਰੋਂ ਕੋ ਸਂਵਾਰਤੀ ਹੈਂ ਬੇਟਿਆਂ : ਸੁਨੀਤਾ ਢੁਲ

ਗੋਹਾਨਾ, 11

ਸਿਤਮਬਰ (ਅਰੋਡਾ) : ਬੀ.ਪੀ.ਏਸ. ਮਹਿਲਾ ਵਿਸ਼ਵਵਿਦਾਲਾਯ ਮੇਂ ਗੁਰੂਵਾਰ ਕੋ ਛਾਤ੍ਰਾਂ ਕਲਾਣ ਅਧਿ਷ਠਾਤਾ ਪ੍ਰੋ. ਸ਼ਵੇਤਾ ਸਿੰਘ ਦਾਰਾ ਦੀਕਾਖਾਰਮਥ ਕਾਰਧਕਮ 2025 ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ।

ਅਧਿਕਤਾ

ਵਿਸ਼ਵਵਿਦਾਲਾਯ ਕੀ ਵੀ.ਸੀ. ਪ੍ਰੋ. ਸੁਦੇਸ਼ ਨੇ ਕੀ। ਮੁੜਾ ਅਤਿਥਿ

ਸਮਾਜਸੇਵੀ ਪਵਨ ਜਿੰਦਲ ਔਰ ਵਿਸ਼ਿ਷ਟ ਅਤਿਥਿ ਰਾ਷ਟ੍ਰੀਯ ਸ਼ਿਕਾਕ ਪੁਰਸਕਾਰ 2025 ਸੇ ਸਮੱਨਿਤ ਸ਼ਿਕਿਕਾ ਸੁਨੀਤਾ ਢੁਲ ਰਹੇ।

ਸੁਨੀਤਾ ਢੁਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬੇਟਿਆਂ ਕਿਭੀ ਭੀ ਬੋਝ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ, ਬੇਟਿਆਂ 2 ਘਰਾਂ ਕੋ ਸਂਵਾਰਤੀ ਹੈਂ। ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਬੇਟਿਆਂ ਦੇ ਆਗਰੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਏਕਾਗ੍ਰਤਾ ਦੇ ਸਾਥ ਲਕਾਰ ਪਰ ਫੋਕਸ ਕਰਕੇ ਮੇਹਨਤ ਕਰੋ, ਸਫਲਤਾ ਅਵਸਥ ਮਿਲੇਗੀ। ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸ਼ਿਕਾਕ ਦਾ ਦਾਇਤ੍ਵ ਬਹੁਤ ਬਡਾ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਕੇਵਲ ਸ਼ਿਕਾਕ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦੇਨੀ ਅਧਿਕਾਰ ਬੱਚੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਛੂਪੀ ਪ੍ਰਤਿਆਂ ਦੇ ਪਹਚਾਨ ਕਰਨਾ ਔਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਿਖਾਰਾਨ ਸ਼ਿਕਾਕ ਦੀ ਮੂਲ ਦਾਇਤ੍ਵ ਹੈ।

ਸੁਨੀਤਾ ਢੁਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਛਾਤ੍ਰਾਂ ਅਪਨੇ ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਦੇ ਸਪਨਾ ਪੂਰਾ ਕਰ ਸਕਤੀ ਹੈ।



ਦੀਪ ਪ੍ਰਯਵਲਿਤ ਕਰ ਕਾਰਧਕਮ ਦੀ ਸ਼ੁਭਾਰਥ ਕਰਤੇ ਹੋਏ ਅਤਿਥਿ।

ਸਾਂਸਕਾਰ ਵਿਹੀਨ ਹੋਤਾ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ। ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਸਾਂਸਕਾਰ ਖਤਮ ਹੋਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ ਜੋ ਹਮਾਰੀ ਧਰੋਹਰ ਥੀ। ਨੈਤਿਕ ਸ਼ਿਕਾਕ ਗੁਰੂਆਂ ਦੇ ਮਿਲਤੀ ਥੀ ਜੋ ਆਜ ਬਿਲਕੁਲ ਖਤਮ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ।

ਜਿੰਦਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਗੁਰੂ ਸ਼ਿਵ ਪੰਧਰਾ ਸ਼੍ਰੇ਷਼ਟ ਪੰਧਰਾ ਥੀ। ਮਾਂ ਔਰ ਗੁਰੂ

ਸਾਬਦੇ ਸ਼੍ਰੇ਷਼ਟ ਹੋਤੇ ਥੇ। ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਥ ਇਸ ਪੰਧਰਾ ਕੋ ਫਿਰ ਸੇ ਲੌਟਾਨਾ ਹੋਗਾ। ਔਰਤ ਹਰ ਯੁਗ ਮੈਂ ਸ਼੍ਰੇ਷਼ਟ ਰਹੀ ਹੈ। ਜੀਵਨ ਮੈਂ ਮਾਂ ਕਾ ਰੋਲ ਬਹੁਤ ਬਡਾ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਬੇਟਿਆਂ ਭਾਰਤ ਦੀ ਭਵਿਖਾਂ ਹੈਂ, ਦੇਸ਼ ਨਿਰਮਾਣ ਦੀ ਬਡੀ ਜਿਸਮੇਦਾਰੀ ਹਮਾਰੀ ਬੇਟਿਆਂ ਪੰਧਰਾ ਹੈ। ਸਚਾਈ, ਈਮਾਨਦਾਰੀ, ਦੂਦੀ ਸੰਕਲਪ ਦੇ ਕੋਈ ਭੀ ਕਾਮ ਕਿਯਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ।

ਛਾਤ੍ਰਾਂ ਕਲਾਣ ਅਧਿ਷ਠਾਤਾ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਵਾਰਿੰਕ ਗਤੀਵਿਧੀ ਪੁਸ਼ਟਕ ਕਾ ਭੀ ਵਿਮੋਚਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਅਵਸਰ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਵਾਰਿੰਕ ਗਤੀਵਿਧੀ ਪੁਸ਼ਟਕ ਦੀ ਮੁਦਰਾ ਅਤੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਦੇਸ਼ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬੱਚੇ ਦੀ ਪਹਲੀ ਗੁਰੂ ਮਾਂ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਆਜ ਭੌਤਿਕਵਾਦ ਦੇ ਯੁਗ ਮੈਂ ਏਕਲ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦੀ ਕ੍ਰੇਜ ਬਢ ਰਹਾ ਹੈ, ਜਿਸਕੀ ਵਜਹ ਦੇ ਸਮਸਥਾ ਭੀ ਉਤਨੀ ਹੀ ਬਡੀ ਹੋਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਜ ਦੀ ਬੱਚੀ

ମହିଳା ଆମ୍ରିତ

१०८

कार्यक्रम: 2025
का आयोजन किया

हरिग्रनी न्यूज़ ►► गोलाना

(विविध), खानपुर कला में गुरुवार को दीक्षारथ्म कार्यक्रम: 2025 का आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि की कुलपति प्रो. सुदेश ने की जबकि संयोजन छात्र कल्याण अधिकारी प्रो. भौता सिंह ने किया। मुख्य अतिथि समाजसेवी व्यवसायी पवन जिंदल और विशिट अतिथि गढ़ीय रियल एस्टेट: 2025 से सम्पादित शिक्षिका सुनीता डुल रहीं। पवन जिंदल ने कहा कि भारत की संस्कृति बहुत श्रेष्ठ है। यह कथि पुनि और गुरुज्ञों का देश है। भारत अपने सांस्कृतिक मूल्यों की महता के चलते पहले पी विश्व गुरु था।

आज देश के श्रेष्ठ नेतृत्व की बजह से फिर से भारत विश्व ग्रुप बनने की दिशा में अग्रसर है। पवन जिंदल ने कहा कि आज भारतीकावाद के उगा में एकल परिवारों का क्रेत्र बढ़ रहा है जिसकी बजह से समस्याएं भी उतनी ही बढ़ी उत्पन्न हो रही हैं आज का बच्चा संस्कार विहीन होता जा रहा है। परिवार से संस्कार छल्ल होते जा रहे हैं जो हमारी प्राहोर थी। नीतिक शिक्षा उल्लंघों से मिलती थी जो आज ज्ञात हो रही है। गुरु शिष्य परम्परा श्रेष्ठ परम्परा थी। माँ और गुरु सबसे श्रेष्ठ होते थे। आग रहे फिर से भारत को विश्व ग्रुप बनाना हो तो हमें फिर से अपनी संस्कार पूरित सांख्यिक परमार्थों को अपनाना होगा। कार्यक्रम में आग कल्याण अधिष्ठित विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक गतिविधि पुस्तक का भी तिमोचन किया गया। मध्य संचालन डॉ. महेश कौशिक ने किया। धन्यवाद जापन सह छाता कल्याण अधिष्ठित डॉ. कृतिका दिव्या ने किया।

अपनी सांस्कृतिक धरोहर को खो रहे देशवासी, हमें अपनी संस्कार पूरित सांस्कृतिक प्रगति आँ को अपनाना होगा

卷之三

तिट्ठवावैद्यालय तथा और त्याग का जीवंत स्वरूपः ग्रो. सुदेश

विद्या की कुलपति ग्रो. सुदेश ने कहा कि भारत मूल सिंह जीवंत स्वरूप है। उन्होंने आत्माओं को आश्रित किया जिक्र के बाल विषय सम्बोधित शिक्षा ही नहीं अपितु संस्कारित व कौशल युक्त शिक्षा के लिए हम ग्रन्थिवद हैं। मैच सचालन डॉ. महेश कौशिक ने किया। धर्मवाच ज्ञापन काले सह छात्रा कल्पणा अधिकारा डॉ. कृतिका दीह्या ने किया। इस अवसर पर कुलसिंचय ग्रो. शिवालिक यात्रा, डॉन ऐकड़ेमिक अफेयर्स ग्रो. विजय नेहरा, प्रॉफेटर ग्रो. इश्वरा बसल व डायरेक्टर यूथ वेलफेर अफेयर्स ग्रो. मुम्पा जोशी भी घोषृद हो।



भौतिकवाद के युग में एकल परिवारों का क्रेज बढ़ा : जिंदल



महिला विश्वविद्यालय में दीप प्रज्ञलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते पवन जिंदल व कुलपति प्रो. सुदेश ◎ सौ. प्रवक्ता

वि. गोहाना : भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय में गुरुवार को दीक्षारंभ कार्यक्रम 2025 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुदेश ने की। मुख्य अतिथि समाजसेवी पवन जिंदल विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित सुनीता दुल रहे। संयोजन छात्रा कल्याण अधिष्ठाता प्रो श्वेता सिंह ने किया।

मुख्य अतिथि पवन पवन जिंदल ने कहा कि भारत की संस्कृति बहुत श्रेष्ठ है। उन्होंने कहा कि आज

भौतिकवाद के युग में एकल परिवारों का क्रेज बढ़ रहा है, जिसकी वजह से समस्या भी उतनी ही बड़ी होती जा रही है। सुनीता दुल ने कहा कि बेटियां कभी भी बोझ नहीं होती, बेटियां दो घरों को संवारती हैं। उन्होंने बेटियों से आग्रह किया एकाग्रता के साथ लक्ष्य पर फोकस करके मेहनत करें, सफलता अवश्य मिलेगी। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक गतिविधि पुस्तक का भी विमोचन किया गया। इस मौके पर कई लोग मौजूद रहे।

भारत ऋषि-मुनियों और गुरुओं का देश : पवन

गोहाना। भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां में वीरवार को दीक्षारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि पवन जिंदल और विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका सुनीता ढुल रहीं।

पवन जिंदल ने कहा कि भारत की संस्कृति बहुत श्रेष्ठ है। यह ऋषि मुनि और गुरुओं का देश है। भारत अपने सांस्कृतिक मूल्यों की महता के चलते पहले भी विश्व गुरु था। आज देश के श्रेष्ठ नेतृत्व की वजह से फिर से भारत विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर है।

कार्यक्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता विभाग की ओर से प्रकाशित वार्षिक गतिविधि पुस्तक का भी विमोचन किया गया। मंच संचालन डॉ. महेश कौशिक ने किया। संयोजन छात्रा कल्याण अधिष्ठाता प्रो. श्वेता सिंह ने किया।

कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि भगत फूल सिंह विवि तप, त्याग का जीवंत स्वरूप है। धन्यवाद ज्ञापन सह छात्रा कल्याण अधिष्ठाता डॉ. कृतिका दहिया ने किया। कुलसचिव प्रो. शिवालिक यादव, प्रो. विजय नेहरा, प्रो. ईश्विता बंसल, प्रो. सुषमा जोशी भी मौजूद रहे। संवाद



सोनीपत के खानपुर कलां स्थित महिला विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान दीप जलाते मुख्य अतिथि पवन जिंदल व कुलपति प्रो. सुदेश। मोतः विवि

बीपीएस महिला विश्वविद्यालय के दीक्षारम्भ कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुँचे समाजसेवी व व्यवसायी पवन जिंदल

जन जागरण संदेश

खानपुर कला / बोहाना, (अग्रिम जिंदल), 11 सितम्बर। भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर कला में आज छात्रा कल्याण अधिष्ठाता प्रो श्वेता सिंह ने दीक्षारम्भ कार्यक्रम 2025 का सफल आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुदेश ने की, जबकि कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि समाजसेवी व व्यवसायी श्री पवन जिंदल ने छात्राओं को सम्बोधित किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित शिक्षिका श्रीमती सुनीता दुल ने शिरकत की। अपने संबोधन में पवन जिंदल ने कहा कि भारत की संस्कृति बहुत श्रेष्ठ है, यह अधि मुनि और गुरुओं का देश है। उन्होंने कहा कि बच्चे की पहली गुरु मां होती है। उन्होंने कहा कि भारत पहले भी विश्व गुरु था। आज देश के श्रेष्ठ नेतृत्व की वजह से फिर से भारत विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर है। श्री जिंदल ने



कहा कि आज भौतिक बाद के युग में एकल परिवारों का कोज बढ़ रहा है, जिसकी वजह से समस्या भी उतनी ही बड़ी होती जा रही है। आज का बच्चा संस्कार विहीन होता जा रहा है। परिवार से संस्कार खातम होते जा रहे हैं जो हमारी धरोहर थी। नैतिक शिक्षा गुरुओं से मिलती थी जो आज बिल्कुल खातम हो रही है।

गुरु शिष्य परंपरा श्रेष्ठ परंपरा थी। माँ और बुढ़ी सबसे श्रेष्ठ होते थे। उन्होंने कहा कि आज इस परंपरा को फिर से उठाना होगा। अब भारत को विश्वगुरु बनाना है। पवन जिंदल ने कहा कि औरत हर युग में श्रेष्ठ रही है। जीवन में माँ का रोल बहुत बड़ा होता है। शिक्षियों भारत का भविष्य है, देश

निर्माण की बड़ी जिम्मेदारी हमारी बेटियों पर है। सच्चाई, ईमानदारी, दृढ़ संकल्प से कोई भी काम किया जा सकता है। पवन जिंदल ने कहा कि विश्व का कल्याण और प्राणियों में सद्गवाना की संस्कृति बाला देश भारत है, उन्होंने कहा कि विश्व की श्रेष्ठ यथा शक्ति का देश भारत है। छात्राओं को संबोधित करते हुए श्रीमती सुनीता दुल ने कहा कि बेटियों कभी भी बोझ नहीं होती, बेटियों दो घरों को संवारती हैं। उन्होंने बेटियों से आगाह किया एकादशी के साथ लक्ष्य पर फोकस करके मेहनत करें सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने कहा कि शिक्षक का दायित्व बहुत बड़ा होता है, केवल शिक्षा ही नहीं देनी अपितु बच्चों के अंदर सुधौ प्रतिभा को पहचान करना और उसे निखारना शिक्षक का मूल दायित्व है। सुनीता दुल ने कहा कि छात्राएं अपने माता-पिता का सपना पूरा कर सकती हैं उन्हें बुलादियों पर लेकर जा सकती हैं। छात्राओं से आहुन करते हुए उन्होंने कहा कि रास्ते से न भटके, अपने शिक्षकों के बताए मार्ग पर चलें। अपनी एकजी को सही दिशा में लगाए। माँ अपने बच्चों की

प्रायोगिक शिक्षिका होती है बच्चों को संस्कारवान शिक्षा देना माता की जिम्मेदारी होती है उन्होंने खुद को मिले राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार को केवल सम्मान नहीं बॉल्क प्रोत्साहन और उत्तरदायित्व माना। अपने अद्यक्षीय संबोधन में कुलसंघ प्रोफेसर सुदेश ने कहा कि वह कोई सम्मान्य विश्वविद्यालय नहीं है यह तप, त्याज का जीता जागरा स्वरूप है। उन्होंने छात्राओं को आश्वस्त किया कि केवल विषय सम्बंधित शिक्षा ही नहीं अपितु संस्कृतिरित व कौशल बुलाव शिक्षा के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। इस अवसर पर छात्र कल्याण अधिष्ठाता विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक अन्तिमिय पुस्तक का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम में भंच संचालन डॉ महेश काशीश के द्वारा किया गया था। जबकि धन्यवाद जापन सह छात्रा कल्याण अधिष्ठाता डॉ कृष्णचandra द्वारा ने किया। इस अवसर पर कुलसंघित प्रो शिवालिक यादव, श्रीन एकड़ैमिक अफेयर्स प्रो विजय नेहरा, प्रॉफेसर प्रो इश्कत बंसल व डायरेक्टर यथा वेलफेयर अफेयर्स प्रो मुष्मा जोशी भी मौजूद रहे।